बिल एक, चुनौती अनेक... वन नेशन वन इलेक्शन से जुड़ा बिल संविधान संशोधन विधेयक है इसलिए लोकसभा और राज्यसभा में इस बिल को पास कराने के लिए विशेष बहमत की आवश्यकता होगी

क्या 'इंडिया' ब्लॉक रोक सकता है वन नेशन वन इलेक्शन का रास्ता, संसद और विधानसभाओं का गणित क्या कहता है?

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। वन नेशन वन इलेक्शन बिल को लोकसभा में स्वीकार कर लिया गया है। अब इसे संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के पास भेज दिया गया है। जेपीसी की सिफारिशें मिलने के बाद अब नरेंद्र मोदी सरकार की अगली चुनौती इसे संसद से पास कराने की होगी। चूंकि वन नेशन वन इलेक्शन से जुड़ा बिल संविधान संशोधन विधेयक है इसलिए लोकसभा और राज्यसभा में इस बिल को पास कराने के लिए विशेष बहमत की आवश्यकता होगी। अनुच्छेद 368 (2) के तहत संविधान संशोधनों के लिए विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक सदन में यानी कि लोकसभा और राज्यसभा में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत द्वारा इस विधेयक को मंजूरी देनी होगी।

वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा इस मुद्दे को स्पष्ट करते हुए कहते हैं, 'इस

विधेयक को दोनों सदनों के सामने प्रस्तुत किया जाना होगा, और दो-तिहाई सदस्यों को मतदान करना होगा ताकि यह पारित हो सके।' पूर्व लोकसभा सचिव पीडीटी अचार्य भी इस बात से सहमत हैं। उन्होंने कहा कि एक संविधान संशोधन बिल होने के नाते इस बिल को इस संवैधानिक प्रक्रिया को पूरा करना होगा।

लोकसभा का नंबरगेम इस तरह है

दरअसल लोकसभा में एनडीए के पास दो तिहाई बहुमत नहीं है। हां एनडीए के पास सामान्य बहुमत जरूर है। लोकसभा में अगर सभी 543 सांसद इस बिल पर वोटिंग में शामिल होंगे, तो बिल पास कराने के लिए सरकार को 362 वोट चाहिए होंगे। इस वक्त बीजेपी लोकसभा में बीजेपी के 240 सांसद हैं। अगर एनडीए का आंकड़ा देखें तो यहां इनकी सांसदों की संख्या 293 है। इस तरह से लोकसभा में नरेंद्र मोदी सरकार को 69 सांसदों की कमी पड़ती दिख रही है।

इस वक्त बीजेपी सरकार के लिए राहत की बात ये है कि गैर 'इंडिया' ब्लॉक की कुछ पार्टियों ने वन नेशन वन इलेक्शन बिल के लिए समर्थन जताया है। इनमें जगन मोहन की पार्टी वाईएसआरसीपी नवीन पटनायक की बीजेडी और मायावती की बीएसपी शामिल है। वाईएसआरसीपी के लोकसभा में 4 सांसद हैं जबकि बीजेडी और बीएसपी के लोकसभा में कोई सांसद नहीं हैं।

के चंद्रशेखर राव की पार्टी भारत राष्ट्र समिति ने इस बिल पर अभी कोई स्पष्ट राय नहीं दी है और वेट एंड वाच की मुद्रा में है। नवीन पटनायक की पार्टी बीजेडी ने कहा है कि वे बिल की कॉपीज देखने के बाद औपचारिक प्रतिक्रिया देंगे। अगर 'इंडिया' ब्लॉक अपने कुनबे को छिटकने से बचाने में सफल रही तो वन नेशन वन इलेक्शन बिल को लोकसभा से पास कराने में नरेंद्र मोदी सरकार को इस बिल को लेकर काफी चुनौतियां मिलने वाली हैं।

राज्यसभा का नंबरगेम: वन नेशन वन इलेक्शन बिल को राज्यसभा में पास कराने के लिए 164 वोटों की जरूरत होगी। राज्यसभा में इस वक्त 245 में से 112 सीटें एनडीए के साथ है। इसमें 6 मनोनीत सांसद भी शामिल हैं।

यानी कि उच्च सदन में भी सरकार के पास बिल को पास कराने के लिए जरूरी संख्याबल नहीं है। राज्यसभा में एनडीए के पास 52 वोटों की कमी पड़ रही है। अगर एनडीए जगनमोहन की वाईएसआरसीपी का साथ लेने में सफल होती है तो इन्हें वाईएसआरसीपी के 11 और और सांसदों का समर्थन हासिल हो जाएगा। लोकसभा में भले ही बीजेडी के एक भी सांसद न हो लेकिन राज्यसभा में पार्टी के 7 सांसद है। अगर बीजेपी, बीजेडी का समर्थन राज्यसभा में हासिल करने में सफल रहती है तो एनडीए को 7 और सांसदों का समर्थन हासिल हो जाएगा।

इसके अलावा राज्यसभा में बीएसपी के 1 सांसद, एआईएडीएमके के 3 सांसद हैं। इनके अलावा पूर्वोत्तर के कुछ सांसद भी राज्यसभा में हैं जो सरकार के साथ आ सकते हैं। एआईएडीएमके ने अपना रुख अभी स्पष्ट नहीं किया है।

यह खुलासा कोई और नहीं बल्कि उनके घर का बिजली का बिल ही कर रहा है

सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क का बिल बीपीएल परिवार से कम? बिजली जली फुल, मीटर में यूनिट गुल!

● मंथन संवाददाता

संभल। उत्तर प्रदेश स्थित संभल से समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर्रहमान बर्क के घर बिजली का बिल बीपीएल परिवारों की श्रेणी से भी कम आता है? यह खुलासा कोई और नहीं बल्कि उनके घर का बिजली का बिल ही कर रहा है। हालांकि बिजली चोरी के आरोपों पर सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने सफाई दी है। उन्होंने कहा कि बोले कि मैं सारे बिजली के बिल जमा करता हूं। अगर मेरे खिलाफ कार्रवाई होगी तो मैं कानूनन जवाब दूंगा।

बता दें यूपी में बीपीएल परिवारों का बिल 12, 420 रुपये आता है। वहीं बर्क के दादा के घर का बिल 10,725 रुपये आया है। दूसरी ओर बर्क के घर बिजली बिल 3638 रुपये आया है। सपा सांसद बर्क के घर का बिल वायरल है। बिजली बिल नवंबर महीने का है। बिजली के बिल का मीटर शून्य दिख रहा है। अब सवाल है कि बिजली का इस्तेमाल हुआ तो मीटर शून्य कैसे?

सांसद के घर में तीन मीटर?

सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क घर बिजली के 3 मीटर हैं। 1 मीटर उनके दादा पूर्व सांसद शफीकुर्रहमान बर्क के नाम, 1 मीटर एसपी सांसद जियाउर्रहमानबर्क के नाम पर है और 1 मीटर में एक समय में शून्य यूनिट दिखा रहा है। अब बिजली विभाग अब इसकी जांच कर रहा है। 16 दिसम्बर को सांसद जिया उर्रहमान बर्क के घर मीटर की जांच हुई। संभल सांसद के घर में 2, 4 और 3 किलोवाट के मीटर लगे थे। सांसद जिया उर्रहमान का घर दीपासराय इलाके में है। मंगलवार को उनके घर पुराने मीटर हटाकर स्मार्ट मीटर लगाए गए।

संभल में 14 दिसम्बर से अवैध कनेक्शन के खिलाफ मुहिम जारी है। दीपा सराय, खग्गू सराय, सरायतरीन इलाके में छापेमारी हुई। 14 दिसम्बर को दीपा सराय में 4 मस्जिदों में अवैध कनेक्शन मिले थे।

केजरी की घोषणाएं संजीवनी योजना के तहत ये इलाज सभी बुजुर्गों के लिए मुफ्त होगा, चाहे वो किसी भी कैटेगरी में आते हों

दिल्ली में 60 साल से ऊपर बुजुर्गों का मुफ्त इलाज, चुनाव से पहले केजरीवाल की तीसरी बड़ी घोषणा

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने 18 दिसम्बर को बुजुर्गों के लिए संजीवनी योजना का ऐलान किया। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले केजरीवाल ने घोषणा की कि 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों का मुफ्त इलाज होगा। केजरीवाल ने साफ किया कि ये इलाज सभी बुजुर्गों के लिए मुफ्त होगा, चाहे वो किसी भी कैटेगरी में आते हों।

इससे पहले केजरीवाल बुजुर्गों के लिए 2500 रुपए पेंशन, ऑटोवालों के लिए 5 लाख तक का बीमा और महिलाओं के लिए 1000 रुपए महीने की घोषणा कर चुके हैं।

दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। अगले दो महीने में चुनाव हो सकते हैं। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल किया था और 70 में से 62 सीटें जीती थीं।

23 दिन में 4 ऐलान

12 दिसंबर: केजरीवाल ने 12 दिसंबर को महिलाओं को हर महीने रू. 1000 रुपए देने का ऐलान किया। इसे महिला सम्मान योजना नाम दिया गया है। 18 साल की उम्र पूरी करने वाली हर महिला इस स्कीम के दायरे में आएगी। केजरीवाल ने यह भी कहा कि चुनाव बाद महिलाओं को हर महीने मिलने वाली रकम को बढ़ाकर रू. 2100 कर दिया जाएगा।

10 दिसंबर: 10 दिसंबर को दिल्ली में एक ऑटो ड्राइवर के यहां खाना खाने पहुंचे अरविंद केजरीवाल ने लोगों के साथ सेल्फी भी ली थी।

केजरीवाल ने 10 दिसंबर को ऑटो चालकों के लिए 4 ऐलान किए थे। उन्होंने कहा था कि ऑटो चालक की बेटी की शादी के लिए 1 लाख रुपए दिए जाएंगे। होली-दिवाली पर वर्दी बनवाने के लिए ढाई-ढाई हजार रुपए दिए जाएंगे। 10 लाख रुपए का लाइफ इंश्योरेंस और 5 लाख का एक्सीडेंटल इंश्योरेंस भी कराया जाएगा। साथ ही ऑटो चालकों के बच्चों की कोचिंग का पैसा दिया जाएगा।

21 नवंबर: केजरीवाल ने 21 नवंबर को बुजुर्गों की पेंशन स्कीम को दोबारा शुरू करने का ऐलान किया। स्कीम में 80 हजार नए बुजुर्गों को और जो?ा गया है। पहले 4.50 लाख लोगों को इस स्कीम का फायदा मिलता था। अब पांच लाख से ज्यादा बुजुर्ग इस स्कीम के दायरे में आएंगे।60 से 69 साल तक के बुजुर्गों को हर महीने 2000 रुपए दिए जाएंगे। वहीं 70 साल से ऊपर के बुजुर्गों को 2500 रुपए महीना मिलेगा। स्कीम का ऐलान करते हुए दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा- बुजुर्गों के आशीर्वाद से वह जेल से बाहर आए थे। यह स्कीम उनको शुक्रिया अदा करने के लिए है।

दिल्ली में अकेले विधानसभा चुनाव लड़ेगी 'आप'

18 दिसम्बर को यह खबर सामने आई थी कि 'आप' दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 15 सीट देने पर विचार कर रही है, लेकिन केजरीवाल ने एक्स पर पोस्ट के जरिए गठबंधन की बात को नकार दिया है।

'आप' ने अब तक 31 सीटों पर प्रत्याशी घोषित किए हैं। 2020 चुनाव में 27 सीटों पर 'आप', जबकि 4 पर भाजपा के विधायक थे। 'आप' ने इस बार 27 विधायकों में से 24 के यानी 89 प्रतिशत टिकट काट दिए हैं।

सावजी ढोलकिया जिन्होंने 13 साल की उम्र में स्कूल छोड़ा, कभी 180 रूपए थी कमाई, आज है हजारों करोड़ का कारोबार

ऐसे शख़्स जो दरियादिली के लिए तो मशहूर हैं, साथ ही उनकी कहानी भी किसी मोटिवेशनल स्टोरी से कम नहीं हैं। 13 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़ घर से कमाने निकले शख़्स ने आज हज़ारों करोड़ों का कारोबार कैसे खड़ा किया। हम बात कर रहे हैं सूरत के डायमंड किंग सावजी ढोलकिया की, जोकि हरिकृष्ण डायमंड नाम की कंपनी के संस्थापक और चेयरमैन हैं। यह कंपनी हीरे एक्सपोर्ट करने का काम करती है। सावजी ढोलकिया का जन्म गुजरात के अमरेली जिले के छोटे से गांव में हुआ था। सूरत आकर यहां पर वह एक फ़ैक्ट्री में काम करने लगे। तब उन्हें मात्र 180 रुपए हर माह सैलरी मिलती थी। ज़्यादा पैसे कमाना चाहते थे, इस वजह से उन्होंने अपने दोस्त के साथ हीरा घिसने का काम शुरू किया। उन्होने 10 साल तक इसमें काम किया। इसके बारे में अनुभव होने पर उन्होंने खुद की कंपनी शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने साल 1991 में हरि कृष्ण नाम की कंपनी की स्थापना की।

उस समय कम्पनी का कारोबार तक़रीबन एक करोड़ रुपये के आस पास था। आज इसका सालाना टर्नओवर 6,000 करोड़ से भी अधिक का है। 5000 से भी अधिक कर्मचारी इसमें काम करते हैं। सावजी ढोलकिया अपने कर्मचारियों को महंगे-महंगे गिफ़्ट देने के लिए

जाने जाते हैं।

एमबीए पास पोते से करवाई मजदूरी:

लेकिन इस कारोबारी ने अमेरिका से एमबीए की पढ़ाई पूरी करके लौटे पोते रुविन ढोलकिया को एक गुमनाम और आम आदमी का जीवन जीने के लिए चेन्नई भेज दिया। उद्देश्य उसे बिजनेस स्कूल में सिखाई गई शिक्षा से परे असल जिंदगी के असल मैनेजमेंट की शिक्षा प्रदान करना था। दादा के आदेश पर रुविन ढोलकिया सूरत से चेन्नई के लिए रवाना हुए। उन्हें अपनी पहचान उजागर न करने का आदेश दिया गया था। यहां तक कि मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से वंचित कर दिया गया और उन्हें जरूरत पड़ने पर आपातकालीन स्थित के लिए महज 6000 रुपए की मामूली राशि दी गई। चेन्नई पहुंचने के बाद रुविन का पहला काम नौकरी की ढूंढना था। हालांकि यह उनके लिए बड़ी चुनौती से भरा रहा। रुविन की पहली नौकरी सेल्समैन एक के रूप में एक गारमेंट शॉप में थी, यहां उन्होंने 9 दिन तक नौकरी की और अपने भीतर बिक्री कौशल को निखारा। इसके बाद, हजारों करोड़ रुपए की कंपनी के मालिक के वारिस रुविन ने 8 दिनों तक एक भोजनालय में काम किया और वेटर के रूप में कुशलता से प्लेट सेटिंग और परोसने का प्रबंधन का सीखा। नौकरी के लिए जब रिजेक्ट होते थे तो उन्हें 'न' का दर्द समझ में आया। वहीं, होटल में वेटर की नौकरी के दौरान जब उन्हें 27 रुपए का टिप मिला तो वो पल उनके लिए सबसे खास था। रुविन की मानें तो वो 27 रुपये उन्हें करोड़ रुपये की फीलिंग दे रहे थे। लेकिन, नौकरी छोड़ते समय जब वेतन के लिए होटल मालिक ने 6 घंटे तक उन्हें खड़ा रखा और उनके सामने 2000 रुपये फेंक दिए, तब उन्हें मेहनतकशों के साथ व्यवहार की सीख की समझ हुई। इस कठिन यात्रा दौरान रुविन 8,600 रुपये कमाने में सफल रहे। रुविन की यह यात्रा 30 जुलाई को समाप्त हुई जहां उनके आगमन पर परिजनों की ओर से उनका स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

इजरायली सेना के कब्जे वाले सीरियाई क्षेत्र का पीएम नेतन्याहू ने किया दौरा

इजरायली सेना सीरिया के बफर जोन से निकट भविष्य में नहीं छोड़ेगी अपना कब्जा, पीएम बेंजामिन नेतन्याहू का ऐलान

● मंथन विदेश ब्यूरो

येरुशलम। इजरायल सीरिया के बफर जोन से निकट भविष्य में भी अपना कब्जा नहीं हटाएगा और इजरायली सेना वहां आगे भी डटी रहेगी। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने 16 दिसम्बर को यह बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि इजरायली सेना सीरियाई सीमा पर 'बफर जोन' में और विशेष रूप से माउंट हरमोन की चोटी पर तब तक मौजूद रहेगी ''जब तक कोई अन्य व्यवस्था नहीं हो जाती।''

नेतन्याहू ने कहा कि वह 53 वर्ष पहले एक सैनिक के रूप में माउंट हरमोन की चोटी पर वह खुद भी गए थे, लेकिन हाल की घटनाओं को देखते हुए इजरायल की सुरक्षा के लिए इस चोटी का महत्व और बढ़ गया है। इसलिए इजरायली सैनिक वहां बफर जोन में अपना कब्जा जमाए रखेंगे। पहली बार इजरायल के प्रधानमंत्री ने सीरियाई क्षेत्र में प्रवेश किया है। सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद को विद्रोहियों द्वारा अपदस्थ किये जाने के कुछ दिनों बाद इजरायल ने बफर जोन 'गोलान हाइट्स' की सीमा से लगे दक्षिणी सीरिया के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया।

इजरायल ने दिया टुकड़ियां तैनात करने का निर्देश

प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने रक्षा मंत्री इजरायल कैट्ज के साथ बफर जोन का दौरा किया। कैट्ज ने कहा कि इस दौरान उन्होंने इजरायली सेना को शीघ्र ही वहां टुकड़ियां तैनात करने का निर्देश दिया है, क्योंकि इस क्षेत्र में उनकी लंबे समय तक मौजूदगी हो सकती है। अब इजरायली सेना यहां पर निकट भविष्य में अपना कब्जा जमाए रखेगी।